श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

✿ मारफत सागर ✿

ढूंढ़े सबे मेयराज को, सबे मेयराज में सब।
सो सबे मेयराज जाहेर करी, सो सब मेयराज देखसी अब।।

उस **मेयराज** (दर्शन) की रात्रि को सब ढूंढ़ते हैं। वह रात नब्बे हजार बातों का ब्यौरा है। उसमें तीस हजार शरीयत की बातें तो कुरान में स्पष्ट कही गई हैं और तीस हजार की हिदायत की गई कि यदि कोई इसके योग्य हो तो कहना। बाकी के तीस हजार जो **मारफत** के अर्श अजीम की खास बातों के हैं जो रसूल साहब को खोलने का अधिकार नहीं है। उसे खुदा अपनी उम्मत के लिए आकर खोलेंगे। यही मेरे और मेरी उम्मत के आने की पहचान होगी। उसी मेयराज की रात्रि को शबे मेयराज कहा है। जिसे आज दिन तक सारी दुनियां के लोग खोज रहे हैं, पर किसी को स्पष्ट उस रात्रि और उस ज्ञान का पता नहीं चला। उस शबे मेयराज (दर्शन की रात्रि) के भेद को अपने कहे अनुसार खुद खुदा अल्लाह ताला आखरुलजमा इमाम मेंहदी साहब श्री प्राणनाथजी महाराज ने अपनी ब्रह्मसृष्टि के लिए जाहिर किया है, जिससे सबको उस खुदा के दर्शन होंगे।

नोट—रसूल साहब को अल्ला ताला ने जबराईल फरिश्ते को भेजकर अर्श में बुलाया और बातें कीं। उसको दर्शन की रात कहा है। शबे **मेयराज** का अर्थ दर्शन की रात्रि है।

मसौदा

(ए किताब मारफत सागर जो हकताला के हुकम से पैदा हुई, हादी के दिल पर आप बैठ के बिगैर हिजाब बारीक बातें 'चौपाई' मुंह से केहेलवाईं। सो कलाम ज्यों आवते गए, सो यारों ने लिखे और फिर हादी प्यार से सुनते गए। सो सुन-सुनकर, हुकम से हाल अपने पर अर्स बका लाहूती का लेते गए और जामा नाजुक होता गया। सो इहां तांईं के, आखिर इस आलम नासूत सेती कूच करके, अपने रूहानी आलम बका वतन हमेसगी, असली मिलाप के आराम पकड़्या और ए 'चौपाई' जो नाजिल होती गई थी सो मसौदे ज्यों ही के त्यों ही रहे। सो अब हक हादी के हुकम से मोमिनों ने इसके बाब बांधे हैं, माफक अकल अपनी के पर ए जो 'चौपाई' हादी ने फुरमाई थीं, तिन में एक हरफ़ ज्यादा या कम नहीं किए अब मोमिन इन 'चौपाइयों' के हरफ-हरफ के माएने मगज, जाहेर के और बातून के लेय के हक के हुकम से हादी के कदमों कदम धरेंगे। किस वास्ते के मोमिन हादी के अंग नूर हैं और नूर बिलंद से उतरे हैं तो चढ़ना इनों को जरूर है और अर्स बका के पट हादी ने, इलम लदुन्नी से खोल दिए हैं। और आप हक के नाजी फिरके को हिदायत करके, निसबत मोमिन असलू तन, जो बीच अर्स के हक हादी के कदम तले बैठे हैं। सो देखाई दई है, रूह की नजर से। जिनसों हक ताला ने बका खिलवत बीच, कौल अलस्तो बे रब्ब कुम का किया, तब कालू बला भी रूह मोमिनों ने कह्या है और कलाम अल्ला और हदीसों और कैयों किताबों के बातूनी मगज माएने। हादी ने वारस मोमिनों को, रूह की नजर खोल के, दिल हकीकी

Nijanand App

पर साहेदियों सेती नकस किया है और दिल अर्स कह्या है और दुनियां मुरदार भी नजीक मोमिनों के हैं तिस वास्ते जो हादी तुमको बुलवाने आए थे। सो पट बका का खोल के आगे से केतेक यारों को लेके पधारे हैं। तो मोमिनों को जरूर कदमों कदम धरना है। हुक्म हक हादी के सेती।)

खिलवतकी रद बदलें

पेहेले कहूं अव्वल की, हक हादी हुकम।
मोमिन दिल अर्समें, हकें धरे कदम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि सबसे पहले श्री राजजी महाराज और श्री श्यामाजी महारानी के हुकम से परमधाम के मूल-मिलावा की हकीकत बताती हूं, जिस कारण से मेरे दिल को अर्श बनाकर श्री राजजी महाराज ने अपना सिंहासन बनाया।

जो कह्या आयतों हदीसों, और किताबों बोल।
जिन पर मोहोर महंमद की, सो कहूं फुरमाए कौल।। २ ।।

कुरान की आयतों और मुहम्मद साहब की हदीसों और धर्मग्रन्थों में जो कहा है और जिनके छिपे रहस्यों को आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी को खोलने का अधिकार दिया है, उन वचनों को खोलकर कहती हूं।

एक दूजी को मनसूख, करे आयत आयत को।
तिस वास्ते लेऊं चुन चुन, जो सिरे रखी सबमों।। ३ ।।

कुरान की एक आयत को दूसरी आयत रद करती है, इसलिए मैं कुरान में से खास-खास आयतों को छांटकर जाहिर करती हूं, जो सर्वश्रेष्ठ हैं।

सो सुध पाइए लदुन्नी से, देखे ना उपली नजर।
जो सिफली के दिल मजाजी, बिन इलम देखे क्योंकर।। ४ ।।

इनकी जानकारी जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम वाणी से मिलेगी। ऊपर की नजर से छिपे भेद नहीं खुलेंगे। संसार वालों के झूठे दिल हैं। वह तारतम वाणी के बिना इस इलम को कैसे देख और समझ सकते हैं?

हुकमें कहूं ता दिन की, जो हक हादी रूहों खिलवत।
अबलों जाहेर न काहूं, ए बका मता वाहेदत।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से उस दिन की हकीकत बताती हूं, जिस दिन श्री राजजी, श्यामा जी और रूहों के बीच मूल-मिलावा में इश्क रब्द का वार्तालाप हुआ। यह अखण्ड परमधाम की न्यामत है, जो संसार में आज दिन तक जाहिर नहीं थी।

जब नहीं कछू पैदा हुआ, जिमी या आसमान।
और ना कछू चौदे तबक, फरिस्ते दुनी जहान।। ६ ।।

जब यह जमीन या आसमान कुछ भी नहीं बना था। चौदह लोक का ब्रह्माण्ड नहीं था और न कोई देवी-देवता था। यह संसार (दुनियां) ही नहीं था।

Nijanand App

ना तब चारों चीज को, किनहूं समारे।
ना कछू चांद तब सूरज, ना पैदा सितारे।।७ ।।

तब तक पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु को किसी ने नहीं संभाला था। यह चांद, सूर्य और सितारे नहीं थे।

ना कोई कहे बेचून को, नाहीं बेचगून।
ना केहेने वाला बेसबीका, नाहीं बेनिमून।। ८ ।।

उस समय कोई शून्य, निराकार, निर्गुण और निरंजन कहने वाला भी नहीं था। जिसको कुरान में बेचून, बेचगून, बेसबी और बेनिमून कहते हैं।

ना खाली तब हवा सुन्य, नाहीं ला मकान।
ना कछू किया तब हुकम, ए जो कह्या कुंन सुभान।। ९ ।।

तब निराकार, शून्य मण्डल और मिट जाने वाला संसार भी नहीं था। जब श्री राजजी महाराज ने 'कुंन' शब्द कहकर दुनियां को बनाने का हुकम भी नहीं दिया था।

एक बका नूर–मकान, आगूं नूरतजल्ला।
रह्या जबराईल हद नूर की, आगूं पोहोंचे रसूल अल्ला।। १० ।।

उस समय एक अखण्ड घर अक्षरधाम था और उसके आगे नूरतजल्ला (परमधाम) था। जबराईल फिरश्ता भी अक्षर की हद तक रह गया। आगे परमधाम में रसूल साहब पहुंचे।

जबरूत लाहूत दोऊ बका, हादी रूहें लेवें लज्जत।
ए पातसाही हक की, बीच नूर वाहेदत।। ११ ।।

अक्षरधाम और परमधाम दोनों धाम अखण्ड हैं, परमधाम में श्री श्यामाजी और रूहें आनन्द करती हैं। यही श्री राजजी महाराज की साहेबी का ठिकाना है और यही मूल-मिलावा में रूहों की एकदिली का नूर है।

जब न्यामत पाई हक की, खुली मुसाफ हकीकत।
तब सब विध पाइए, हक अर्स मारफत।। १२ ।।

जब श्री राजजी महाराज की साहेबी और एकदिली की हकीकत मिल गई, तो कुरान के सभी रहस्य खुल गये। तब श्री राजजी महाराज और परमधाम की पूरी पहचान मिल जाती है।

जिन को हक मेहेरसों, आप करें हिदायत।
सो सबे बिध बूझहीं, अर्स बका निसबत।। १३ ।।

जिन मोमिनों को हक श्री राजजी महाराज मेहर कर स्वयं इल्म के भेद समझाते हैं, वह अखण्ड परमधाम की तथा अपने अंगना होने के सम्बन्ध को अच्छी तरह समझते हैं।

अर्स दिल एही हकीकी, अर्स रूहें मोमिन।
रहें दरगाह बीच असल, सूरत अर्स तन।। १४ ।।

यह परमधाम के रूह मोमिन के दिल ही सच्चे हैं, जिनके दिल को श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श बनाया है। परमधाम के बीच इनके असली तन परआतम बैठे हैं।

Nijanand App

खासलखास रूहें कहीं, ए अहमद उमत।
भाई कहे महंमद के, हक खासी खिलवत।। १५ ।।

इन्हीं को श्री राजजी महाराज ने अपनी खासल-खास रूहें कहा है। यही श्री श्यामाजी महारानी की उम्मत हैं (जमात हैं)। रसूल मुहम्मद ने इन्हीं को ही अपना भाई कहा है। श्री राजजी महाराज के मूल-मिलावा में रहने वाले भी यही हैं।

देखो बड़ाई महंमद, मासूक केहेवें हक।
इन के सरभर दूसरा, कोई नहीं बुजरक।। १६ ।।

अब मुहम्मद (श्री श्यामाजी) की साहेबी को देखो कि श्री राजजी महाराज ने स्वयं इनको अपना माशूक कहा है। इनके बराबर दूसरा किसी का मरातबा नहीं है।

दो हिजाब जर मोती के, बीच राह साल सत्तर।
हक महंमद दोऊ हिजाब में, आखिर बातें करी इन बेर।। १७ ।।

मुहम्मद साहब के बीच में दो परदे एक जरी का और दूसरा मोतियों का बताया है। इन दोनों परदों के बीच का रास्ता सत्तर साल का है। सत्तर साल के बाद आखिरी मुहम्मद की हकी सूरत श्री प्राणनाथजी महाराज और श्री राजजी महाराज के बीच कोई परदा नहीं रहेगा। रू-बरू बातें हुईं। यह सत्तर साल के समय का विवरण इस प्रकार से है कि सम्वत् १६७८ में श्री श्यामजी के मन्दिर में श्री देवचन्दजी महाराज को परमधाम की और अपनी पहचान कराई और इसके बाद सत्तर वर्ष तक, अर्थात् सम्वत् १७४८ तक परमधाम मूल-मिलावा सहित श्री राजजी महाराज की सम्पूर्ण वाणी आ गई और हकी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी ही श्री राजजी महाराज हैं जाहिर हो गए।

ए लिख्या सिपारे आममें, करी बातें हक महंमद।
सो मोमिन आयत देख के, सक सुभे करें रद।। १८ ।।

यह बात कुरान के आखिरी आम सिपारे में लिखी है कि रसूल साहब (बसरी मुहम्मद) ने श्री राजजी महाराज से रू-बरू बातें कीं। मोमिन इन आयतों को देखकर अपने सब संशय मिटा लेंगे।

हक महंमद के बीचमें, कहे आड़े परदे दोए।
सत्तर साल बीच राह कही, जाहेरी माएने निसां क्यों होए।। १९ ।।

श्री राजजी महाराज और मुहम्मद साहब के बीच जो दो परदे कहे हैं, उनके बीच का रास्ता सत्तर साल का बताया है। जाहिरी अर्थ लेने से निःसंदेह कैसे हो सकते हैं?

जो लों मुसाफ हकीकत, खोले नहीं वारस।
कोई पावे ना बिना लदुन्नी, हक महंमद रूहें अर्स।। २० ।।

जब तक कुरान के वारिस मोमिनों ने कुरान की हकीकत को नहीं खोला, तब तक बिना तारतम वाणी के श्री राजजी महाराज की, मुहम्मद की, रूहों की और परमधाम की जानकारी नहीं हो सकती।

ए हादी हमेसगी, अर्स बका हकं जात।
नूर रूहें वाहेदत, इत और न कछूए समात।। २१ ।।

अखण्ड परमधाम में श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी महारानी और उनकी रूहें ही आनन्द से रहने वाली हैं। उनके अतिरिक्त मूल-मिलावा में कोई नहीं आ सकता।

Nijanand App

हुई मजकूर अर्समें, सो सब वास्ते इस्क।
अर्स हक हादी रूहें, ए साहेबी बुजरक।। २२ ।।

परमधाम में इश्क के वास्ते वार्तालाप हुआ। जहां श्री राजजी, श्री श्यामाजी, रूहों की एकदिली की ही श्री राजजी की साहेबी है।

खिलवत हक हादीय की, जो इस्क रूहों असल।
ए बातून बारीक वाहेदत की, इत पोहोंचे ना फना अकल।। २३ ।।

जहां श्री राजश्यामाजी का खिलवतखाना है, वहां रूहों का असली इश्क है। परमधाम की एकदिली, की, साहेबी की यह बारीक बातें हैं। यहां संसार की झूठी अक्ल काम नहीं करती।

रूहों कह्या हक हादीय सों, हम तुमारे आसिक।
तुम हमारे मासूक, इनमें नाहीं सक।। २४ ।।

रूहों ने श्री राजजी और श्री श्यामाजी से कहा कि हम आपके आशिक हैं तथा आप हमारे माशूक हो। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

तब कह्या बड़ीरूहने, इस्क मेरा ताम।
हक रूहों की मैं आसिक, मेरा याहीमें आराम।। २५ ।।

तब बड़ी रूह श्री श्यामाजी ने कहा कि इश्क तो मेरी खुराक है, इसलिए मैं श्री राजजी महाराज की और रूहों की आशिक हूं। मुझे इसमें ही आराम मिलता है। मेरा यही काम है।

तब हकें कह्या हादी रूहों को, तुम मासूक मेरे दिल।
इत इस्क मेरा पाए ना सको, जो सहूर करो सब मिल।। २६ ।।

तब श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामाजी महारानी और रूहों से कहा कि तुम मेरे दिल के माशूक हो। यहां तुम सब मिलकर विचार भी कर लो, तो भी मेरे इश्क की पहचान नहीं होगी।

नूर–मकान नूर हक का, जित हैं नूर–जलाल।
तिन दिल हकें यों चाह्या, देखें इस्क नूर–जमाल।। २७ ।।

अक्षरधाम श्री राजजी के नूर से है, जहां नूरजलाल अक्षरब्रह्म रहते हैं। उनके दिल में भी श्री राजजी ने यह चाहना पैदा की कि मैं श्री राजजी महाराज के इश्क की लीला को देखूं।

कैसा इस्क बड़ीरुहसों, कैसा इस्क रूहों साथ।
इस्क हादी का हक से, कैसा हकसों इस्क जमात।। २८ ।।

बड़ी रूह और रूहों के साथ श्री राजजी महाराज कैसा इश्क करते हैं, श्यामाजी का और रूहों का श्री राजजी से कैसा इश्क है?

ए इस्क रमूज रहे हमेसा, हक हादी रूहन।
ए बेवरा क्योंए न होवहीं, बीच वाहेदत इस्क पूरन।। २९ ।।

इश्क का यह वार्तालाप श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहों में हमेशा बना रहता है। जहां सबके अन्दर इश्क ही इश्क हो, वहां इसका विवरण कैसे हो?

Nijanand App

तब हकें दिलमें यों लिया, मैं देखाऊं अपना इस्क।
और पातसाही अपनी, ए देखें रूहें मुतलक।। ३० ।।

तब श्री राजजी महाराज ने अपने दिल में इस तरह से विचार किया कि मैं अपना इश्क और साहेबी रूहों को दिखलाऊं, तब निश्चित रूप से रूहों को जानकारी मिलेगी।

बका अर्स में जुदागी, सो तो कबूं न होए।
ए बेवरा नहीं वाहेदतमें, होए कम ज्यादा बीच दोए।। ३१ ।।

अखण्ड परमधाम में जुदाई कभी होती नहीं है। एकदिली में इसका विवरण हो नहीं सकता। जहां दोनों के बीच कुछ कम ज्यादा हो, तो इश्क का पता चले।

ए मजकूर अव्वल का, हंसते करें सब कोए।
पर कम ज्यादा वाहेदत में, बेवरा क्योंए न होए।। ३२ ।।

यह वार्तालाप सबसे पहले का है, जब सब हंस-हंसकर बातें करते थे, किन्तु परमधाम की एकदिली में कम ज्यादा न होने के कारण से इसका फैसला नहीं हो सकता था।

हक आसिक हादीय का, और आसिक रूहन।
ऐसा हक का सुकन, क्यों सहें बन्दे मोमिन।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज श्री श्यामाजी और रूहों के आशिक हैं। श्री राजजी महाराज के इन वचनों को हक की आशिक रूहें कैसे सहन कर लेतीं?

चाहिए मोमिन आसिक हक के, और आसिक हादी के।
रूहें हादी आसिक हक की, सीधा इस्क बेवरा ए।। ३४ ।।

होना तो यह चाहिए कि रूहें श्री राजजी की और श्री श्यामाजी की आशिक हों। रूहें और श्री श्यामाजी श्री राजजी के आशिक हों यह इश्क की सीधा फैसला है।

वाहेदत कहिए इनको, एक इस्क तन मन।
जुदागी जरा नहीं, वाहेदत में पाव खिन।। ३५ ।।

इनका तन, मन और इश्क सब एक होने से इनको वाहेदत कहा है। ऐसी एकदिली में एक क्षण की भी जुदाई सम्भव नहीं हो सकती।

मैं छिपाऊं तुमको, बैठो पकड़ कदम।
तुम इस्कै से पाओगे, आए मिलो माहें दम।। ३६ ।।

तब श्री राजजी महाराज ने कहा कि तुम मेरे चरण पकड़कर बैठो। मैं तुमसे छिप जाऊंगा, अर्थात् नजर नहीं आऊंगा। तब तुम मुझे इश्क से ही पा सकोगी और एक पल में ही आकर मुझसे मिल जाओगी।

उतर जब तुम देखोगे, लैलत कदर के माहें।
और जिमी औरै आसमान, देखो प्रतिबिम्ब तांहें।। ३७ ।।

जब तुम लैल तुल कदर की रात्रि (मोह) के खेल में उतरकर देखोगे तो वहां पर और ही जमीन होगी और ही आसमान होगा और वहां पर अपने नकली तनों को देखोगे।

Nijanand App

फरामोसी क्यों होएसी, क्या जुदे होसी माहें खेल।
तुमको क्यों हम भूलेंगे, ए कैसी है कदर लैल।। ३८ ।।

रूहों ने कहा कि फरामोशी कैसे होगी? क्या हम खेल में अलग-अलग हो जाएंगे? हम आपको कैसे भूल सकते हैं? यह कैसी कदर की रात्रि है? मोह का खेल है?

कह्या हकें रूहन को, तुम उतरो माहें लैल।
बैठो पकड़ कदम, देखोगे माहें खेल।। ३९ ।।

तब श्री राजजी महाराज ने रूहों से कहा कि तुम रात्रि में उतरो। हमारे चरण पकड़कर बैठो, तो अपने आपको संसार में पाओगे।

देखो और जिमीय को, औरै आसमान।
सो सब फना बीच में, दुनियां सकल जहान।। ४० ।।

वहां तुम्हें और ही जमीन, और ही आसमान दिखाई देंगे। वह सब संसार नाशवान होगा।

तित कानों सुने जाएंगे, ए जो चौदे तबक।
कोई हमारे अर्स की, तरफ न पावे हक।। ४१ ।।

वहां पर चौदह तबक की ही चर्चा होगी और सुनाई पड़ेगी। हमारे अखण्ड परमधाम की जानकारी वहां पर किसी को नहीं होगी।

देखो जिमी दमी आदमी, खलक तमासा।
ए खाली बीच बसत हैं, मुरदों का वासा।। ४२ ।।

वहां पर जाकर जमीन को, आदमी को, जीव-जन्तु को और संसार के तमाशे को देखोगे। उस खाली जमीन में मुर्दे ही वास करते हैं, अर्थात् अखण्ड कोई नहीं है और न वहां किसी को अखण्ड का ज्ञान है।

ए ना कछू पेहेले हुते, ना होसी आखिर।
खेल ऐसा देखो बीच, माहें लैलत कदर।। ४३ ।।

यह इससे पहले भी कुछ नहीं थे और न बाद में कुछ रहेंगे। लैल तुल कदर के बीच में ऐसा खेल देखोगे।

रूहें देखें झूठ फरेब को, कई भांत तमासा।
लाख विधों कई खोजहीं, कोई पावे ना खुलासा।। ४४ ।।

हे रूहो! तुम झूठे संसार में जाकर कई तरह के तमाशे देखोगी। जहां कई लोग लाखों तरह से खोजते हुए मिलेंगे, परन्तु संसार के रहस्य को नहीं समझ पाएंगे।

ए जो दुनी देखो खेलती, आवे जाए हुकम।
झूठा वजूद ना रेहेवहीं, चले कर गिनती दम।। ४५ ।।

यह तुमको जो दुनियां जन्मती-मरती नजर आएगी, वह सब मेरा हुकम ही है। संसार के झूठे तन अपने-अपने सांस पूरे करके मरते रहेंगे।

Nijanand App

आवे जाए माहें खेलहीं, अपने बल उमर।
ढूंढ्या फेर न पाइए, ए मुआ क्यों कर।।४६ ।।

संसार में सभी अपनी उम्र के अनुसार मरने-जीने का खेल करते रहेंगे। यह कैसे मर गया, कहां चला गया, ढूंढ़ने से पता नहीं चलेगा।

कोई आप न चीन्हहीं, ना चीन्हे हक वतन।
ना चीन्हे तिन जिमीय को, ऊपर खड़ा है जिन।।४७ ।।

वहां किसी को अपनी, अपने वतन की तथा श्री राजजी की पहचान नहीं होगी। उस जमीन की भी पहचान नहीं होगी, जिस पर वह खड़े हैं।

कहे हक तुम भूलोगे, उन जिमी में जाए।
रहोगे बीच नासूत के, उतहीं उरझाए।।४८ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि उस जमीन पर जाकर तुम भूल जाओगी और मृत्युलोक के बीच में तुम उलझ कर रह जाओगी।

चलना जेता रात का, अमल जो सरीयत।
दिन मारफत हुए बिना, कछुए ना सूझत।।४९ ।।

वहां पर शरीयत (कर्मकाण्ड) का अमल होगा। वहां सभी जगह अज्ञान की रात्रि का अंधेरा होगा। मारफत के ज्ञान का सूर्य उदय हुए बिना कुछ भी नहीं सूझेगा।

बिना इस्क सूझे नहीं, ए जो रात का अमल।
ए राह चलसी लग फजर, तोरे के बल।।५० ।।

इस अज्ञानता के अंधेरे की पहचान तुम्हें बिना इश्क की समझ के नहीं होगी। यह रास्ता हुकूमत के बल पर ज्ञान का सवेरा होने तक चलेगा।

बातून जब तुम देखोगे, खोलसी रूह नजर।
लैलत कदर के तकरार, तीसरे होसी फजर।।५१ ।।

जब तुम अपनी रूह की नजर को खोलकर बातूनी भेद को समझोगे तो लैल तुल कदर की रात्रि के तीसरे भाग में ज्ञान का सवेरा हो जाएगा।

लिखों हकीकत खिलवत की, आखिर होसी जो सब।
कहां से लिख भेज्या कौन खसमें, कहोगे आए हम कब।।५२ ।।

मैं परमधाम की सब हकीकत लिखकर भेजूंगा, तब संसार का आखिरी समय होगा, परन्तु तुम वहां पर पूछोगे कि यह किसने कहा, कहां से लिखकर भेजा है, हमारा खसम कौन है और हम यहां कब आए?

ए इस्क तो पाइए, जो पेहेले मोकों जाओ भूल।
तुम ले बैठो जुदागी, मैं भेजों तुम पर रसूल।।५३ ।।

हे रूहो! तुम पहले मुझे भूल जाओ तब तुम्हें मेरा इश्क मिलेगा। तुम मेरे से अलग हो जाओ तो मैं तुम्हारे पास रसूल को भेजूंगा।

Nijanand App

रसूल आवेगा तुम पर, ले मेरा फुरमान।
आए मेरे अर्स की, देसी सब पेहेचान।।५४ ।।

रसूल तुम्हारे पास मेरा फुरमान लेकर आएगा और मेरे घर की सब जानकारी (पहचान) देगा।

तब दिल में राखियो, खबरदारी तुम।
इसारतें कई रमूजें, लिख भेजेंगे हम।।५५ ।।

मैं तुम्हें कई तरह से इशारे और दिल की गुझ बातें लिखकर भेजूंगा। तब तुम उन्हें दिल में रख लेना और सावचेत (सावधान) हो जाना।

तुम पर भेजोंगा फुरमान, मासूक के हाथ।
अर्स कुंजी नूर रोसन, भेजों रूह मेरी साथ।।५६ ।।

मैं तुम्हारे पास कुरान को अपने माशूक मुहम्मद के हाथ भेजूंगा। परमधाम की कुंजी तारतम वाणी अपनी बड़ी रूह श्री श्यामाजी के साथ भेजूंगा।

द्वार सबे खोलसी, होसी नूर रोसन।
देखोगे हक सूरत, और असलू तन।।५७ ।।

श्री श्यामाजी महारानी सब दरवाजे खोल देंगी। तब तुम्हें परमधाम का ज्ञान होगा। तभी तुम मेरे स्वरूप को और असली तन को देख सकोगी।

तुम कहोगे कहां खसम, कैसा खेल कौन हम।
देसी साहेदी रसूल रुहअल्ला, जो खिलवत करी हम तुम।।५८ ।।

वहां जाकर तुम कहोगे कि खसम कहां है, खेल कैसा है हम कौन हैं? परमधाम में जो हमने इश्क का वार्तालाप किया है, उसकी गवाही रसूल साहब और श्री श्यामा महारानी देंगी।

हादी मीठे सुकन हक के, कहेगा तुमें रोए-रोए।
तुम भी सुन-सुन रोएसी, पर होस में न आवे कोए।।५९ ।।

श्री श्यामाजी महारानी मेरे सन्देशों को रो-रोकर तुम्हें समझाएंगी। तुम भी सुन-सुनकर रोओगे, पर होश में न आ सकोगे।

तुम कहोगे रसूल को, हम क्यों आए कहां वतन।
मलकूत बिना कछू और है, आगे तो खाली हवा सुंन।।६० ।।

तुम रसूल साहब से कहोगे कि हम क्यों आए हैं? हमारा घर कहां है? क्या बैकुण्ठ के बिना भी कोई और है? आगे तो केवल निराकार और शून्य है।

मैं भेजों रूह अपनी, इलम देसी समझाए।
तब मूल कुल्ल अकल, असराफील ले आए।।६१ ।।

मैं अपनी श्री श्यामाजी महारानी को भेजूंगा जो ज्ञान से तुम्हें समझाएंगी। तब परमधाम की कुल अक्ल जागृत बुद्धि असराफील फरिश्ता लेकर आएगा और श्री प्राणनाथजी के अन्दर बैठकर जाहिर करेगा।

Nijanand App

आयतें हदीसें रसूल, और किताबें सब।
खोलसी इसारतें रमूजें, होसी पेहेचान तब।। ६२ ।।

कुरान की आयतें तथा रसूल साहब की हदीसें और कई धर्मग्रन्थों की सभी इशारतें और रम्जें (रमूजें) असराफील फरिश्ता जागृत बुद्धि के ज्ञान से खोल देगा। तब तुम्हें पहचान होगी।

देखाए फरामोसी तारीकी, ऊपर देऊं मेरा इलम।
जासों मुरदे होवें जीवते, सो दई हाथ हैयाती तुम।। ६३ ।।

तुम्हें माया की फरामोशी दिखाऊंगा और उसके बाद अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान दूंगा, जिससे संसार के मुर्दे जीव अखण्ड हो जाएंगे। उनको अखण्ड करने का काम भी तुम्हारे हाथों से होगा।

जो कछू आखिर होएसी, तुम देत हो आगूं बताए।
सो क्यों हम भूल जाएंगे, जो लेत हैं दिल लगाए।। ६४ ।।

रूहें कहती हैं कि आखिर में जो होगा, वह आप हमें पहले से ही बता रहे हो। हम वहां जाकर कैसे भूल जाएंगे, जब हम आपकी बातों को दिल में धारण कर रखेंगे।

दूर तो कहूं न करोगे, बैठे कदम तले।
फेरें तुमारा फुरमाया, हम ऐसी क्यों करें।। ६५ ।।

हमें कहीं दूर तो नहीं भेजोगे? हम आपके चरणों के तले बैठे हैं। हम आपकी आज्ञा को कैसे टालेंगे? हम ऐसा क्यों करेंगे?

करें हुसियारी आपुस में, हम देखें खेल जुदागी।
देखें हक डारें क्यों जुदागी, हम बैठे सब अंग लागी।। ६६ ।।

इस तरह से आपस में होशियारी करके हम जुदाई का खेल देखेंगे। हम भी देखते हैं कि श्री राजजी हमको अलग कैसे करते हैं? हम सब अंग से अंग लगाकर बैठती हैं।

इन विध एक दूजी सों, करी सबों मसलहत।
आपन मोमिन सब एक तन, बीच कहां पैठे गफलत।। ६७ ।।

इस तरह से सखियों ने एक-दूसरे से मिलकर सलाह की कि हम सब सखियां एकतन हैं, तो हमारे बीच यह भूल कैसे आ सकती है?

मैं भूलों तो तूं मुझे, पल में दीजे बताए।
तूं भूले तो मैं तुझे, देऊंगी तुरत जगाए।। ६८ ।।

मैं भूल जाऊं तो तू मुझे एक पल में बता देना। तू भूलेगी तो मैं तुझे तुरन्त जगा दूंगी।

हम देखेंगे हक इस्क, और पातसाही हक।
सो ए आपन मिल देखसी, ऐसा सुख हक का मुतलक।। ६९ ।।

हम श्री राजजी महाराज के इश्क और साहेबी को देखेंगे। श्री राजजी महाराज के ऐसे सुख को हम निश्चित ही देखेंगे।

Nijanand App

हम रूहों को देखाइए, बड़ा इस्क हक।
और पातसाही हक की, ए जो बड़ी बुजरक।।७० ।।

तब सब रूहों ने श्री राजजी से कहा कि हमें आप अपनी साहेबी और इश्क को दिखाइए, जिसे सबसे बड़ा कहते हो।

हम कदम छोड़ के, कहूं जाए न सकें दूर।
बैठे इत देखें सबे, बीच तजल्ला नूर।।७१ ।।

हम श्री राजजी के चरण छोड़कर दूर नहीं जा सकते। हम परमधाम में बैठकर ही यह खेल देखेंगे।

कहे हक देखो खेल लैल का, बैठे अर्स में इत।
पीछे देखो सरत पर, सूरज मारफत।।७२ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि तुम परमधाम में बैठकर लैल का खेल देखो। उसके बाद अपने समय पर ज्ञान का सूर्य उदय होगा, उसे देखना।

राह रसूल बतावहीं, मेरे अर्स चढ़ उतर।
तब तुम महंमद के, कदम लीजो दिल धर।।७३ ।।

मेरा रसूल तुम्हें परमधाम के आने-जाने का रास्ता और तरीका बताएगा। तब तुम रसूल मुहम्मद के बताए रास्ते क्षर से पार अक्षर और अक्षर के पार अक्षरातीत के रास्ते को दिल में धारण कर लेना।

रात अमल तब मेट के, करसी इलम फजर।
देखोगे दिन मारफत, खोल देसी रूह नजर।।७४ ।।

श्री प्राणनाथजी हकी सूरत अज्ञान का अन्धकार (कर्मकाण्ड) मिटाकर जागृत बुद्धि के ज्ञान से सवेरा करेंगे। तुम्हारी नजर को खोलकर मारफत का ज्ञान तुम्हें दिखाएंगे।

रद बदल आपुसमें, कर बैठे मजकूर।
कौल किया बीच खिलवत, हकें अपने हजूर।।७५ ।।

सभी इस तरह से आपस में रद-बदल (वार्तालाप) करके बैठ गये और आगे राजजी से वार्तालाप होने लगा। तब श्री राजजी महाराज ने मूल-मिलावा में अपने सामने चरणों में सबको बैठाकर वचन दिया।

हकें करी रूहें साहेद, और फरिस्ते साहेद।
आप भी बीच साहेद, कौल किया वाहिद।।७६ ।।

श्री राजजी महाराज ने रूहों को गवाह बनाया और असराफील फरिश्ते को भी गवाह बनाया। खुद भी गवाह बने। इस तरह से अपनी रूहों से श्री राजजी महाराज ने वायदे किए।

इस्क का अर्स अजीममें, रब्द हुआ बिलंद।
तो बेवरा देखाया इस्क का, माहें फरेबी फंद।।७७ ।।

परमधाम में इश्क का बहुत भारी वार्तालाप हुआ, इसलिए इश्क का विवरण करने के वास्ते झूठी माया का खेल दिखलाया।

Nijanand App

आप बैठे दिल देय के, ऊपर बारे हजार।
होसी हांसी सब मेयराजमें, जिनको नहीं सुमार।।७८ ।।

अपनी बारह हजार रूहों को अपने दिल में लेकर सिंहासन पर बैठे। आखिर में जब आमने-सामने (रू-बरू) मिलेंगे तो बेशुमार हंसी होगी।

महामत कहे ए मोमिनों, याद करो खिलवत सुकन।
जो किया कौल अलस्तो-बे-रब, मिल हक हादी रूहन।।७९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! जहां श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी और रूहों ने मिलकर वायदा किया था कि मैं ही एक तुम्हारा खुदा हूं और हमने बेशक कहा था, वहां मूल-मिलावा के उन वचनों को याद करो।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ७९ ।।

इलम लदुन्नी नुकता तारतम

तिस वास्ते दुनी पैदा करी, दई दूर जुदागी जोर।
हमें नजीक लिए सेहेरग से, यों इलमें देखाया मरोर।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने इस वास्ते दुनियां बनाई और फिर हमको जुदाकर खेल में जुदाई दिखाई। बाद में आपने जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर हमें अपने को सेहेरग से नजदीक बताया।

अर्स बका बीच ब्रह्मांड के, सुध चौदे तबकों नाहें।
सो हम को नजीक सेहेरग से, पट खोल लिए बका माहें।। २ ।।

अखण्ड परमधाम की खबर चौदह लोक के ब्रह्माण्ड में किसी को नहीं थी। उस परमधाम के परदे खोलकर हमें सेहेरग से नजदीक दिखाया।

जाहेरियों नजर जाहेर, धरी ऊपर सात आसमान।
हक छोड़ नजीक सेहेरग से, पूजी हवा तारीक मकान।। ३ ।।

संसार के जाहिरी लोगों की नजर ऊपर के सात आसमान (बैकुण्ठ) तक ही सीमित है। श्री राजजी महाराज सेहेरग से नजदीक हैं। उन्हें छोड़कर सब निराकार के पूजक बने हैं।

रूहें अर्स से उतरीं, बीच लैलत कदर।
तिनमें रूहअल्लाह की, भेजी सिरदार कर।। ४ ।।

परमधाम से रूहें लैल तुल कदर की रात्रि में खेल में उतरीं। उन रूहों के बीच श्री श्यामाजी महारानी को सिरदार (प्रमुख) बनाकर भेजा।

ल्याए इलम लदुन्नी, खोली हक हकीकत।
खोले पट सब अर्सों के, हक दिन मारफत।। ५ ।।

श्री श्यामाजी महारानी तारतम ज्ञान लाईं। श्री राजजी की हकीकत बताई। उन्होंने क्षर, अक्षर, अक्षरातीत के अर्शों के सब भेद और राजजी महाराज के मारफत का ज्ञान देकर अन्धकार मिटाकर ज्ञान का दिन जाहिर किया।

Nijanand App